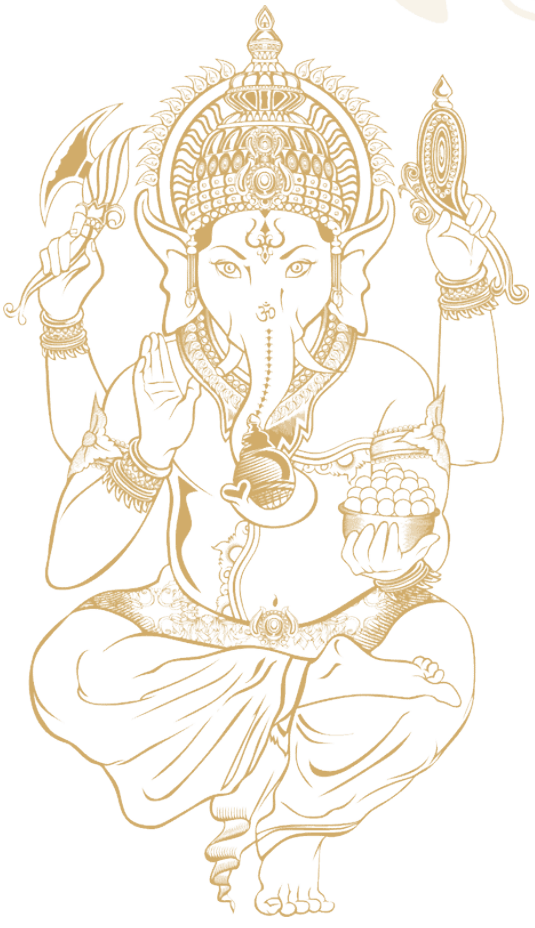

Pulkit

Taruna

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121311802

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14-15/02/1991	जन्म तिथि	24-25/03/1989
गुरु-शुक्रवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 02:45:00	जन्म समय	05:02:00 घंटे
घटी 49:23:27	जन्म समय(घटी)	56:47:28 घटी
India	देश	India
Meerut	स्थान	Rohtak
29:00:00 उत्तर	अक्षांश	28:54:00 उत्तर
77:42:00 पूर्व	रेखांश	76:38:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:12	स्थानिक संस्कार	-00:23:28 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:59:37	सूर्योदय	06:23:17
18:07:33	सूर्यास्त	18:36:47
23:44:16	चित्रपक्षीय अयनांश	23:42:31

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
मंगल 1वर्ष 6मा 10दि	24:33:47	वृश्चि	लग्न	कुंभ	11:01:42	राहु 15वर्ष 6मा 30दि
गुरु	01:56:25	कुंभ	सूर्य	मीन	10:35:29	शनि
27/08/2010	03:45:08	कुंभ	चंद्र	तुला	08:27:26	23/10/2020
27/08/2026	14:00:46	वृष	मंगल	वृष	14:36:09	24/10/2039
गुरु 14/10/2012	20:26:56	मक	बुध	मीन	00:22:20	शनि 27/10/2023
शनि 27/04/2015	12:40:22	कर्क व	गुरु	वृष	08:30:01	बुध 06/07/2026
बुध 02/08/2017	27:00:09	कुंभ	शुक्र	मीन	07:47:38	केतु 15/08/2027
केतु 09/07/2018	07:11:01	मक	शनि	धनु	19:32:08	शुक्र 15/10/2030
शुक्र 09/03/2021	04:11:02	मक व	राहु व	कुंभ	10:53:49	सूर्य 27/09/2031
सूर्य 26/12/2021	04:11:02	कर्क व	केतु व	सिंह	10:53:49	चन्द्र 27/04/2033
चन्द्र 27/04/2023	18:29:30	धनु	हर्ष	धनु	11:31:23	मंगल 06/06/2034
मंगल 02/04/2024	21:59:02	धनु	नेप	धनु	18:33:53	राहु 12/04/2037
राहु 27/08/2026	26:37:28	तुला	प्लूटो व	तुला	21:06:21	गुरु 24/10/2039

लग्न-चलित

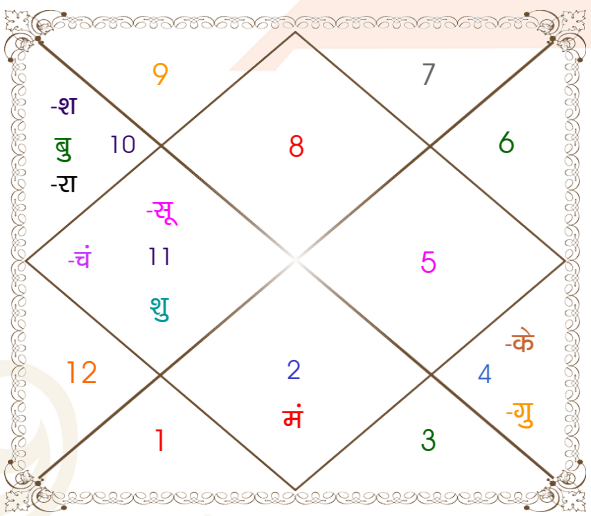

लग्न-चलित

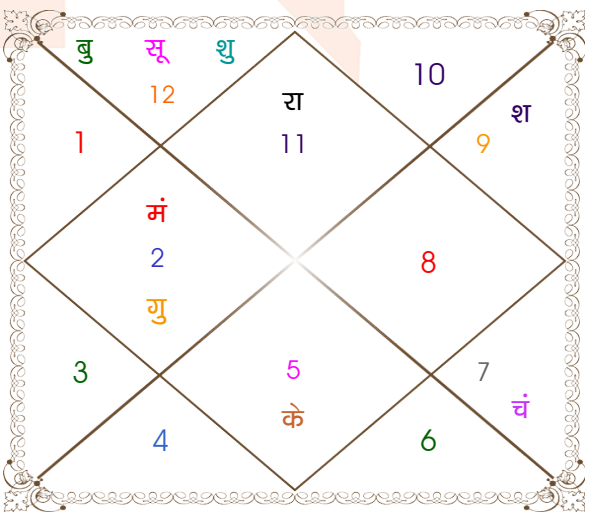

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सिंह	महिष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

च्नसापज का वर्ग मार्जार है तथा ज्ंतनदं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च्नसापज और ज्ंतनदं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

च्नसापज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल च्नसापज कि कुण्डली में सप्तम् भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ज्ंतनदं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु ज्ंतनदं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ज्ंतनदं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु च्नसापज कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

च्नसापज तथा ज्ंतनदं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।